Lucknow IAS Academy

LiA

सत्यमेव जयते

भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना: बाबर एवं हुमायूं

भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना: बाबर एवं हुमायूं

बाबर के आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक दशा

बाबर के भारतीय अभियान के समय भारत राजनीतिक रूप से बिखरा हुआ था। सम्पूर्ण भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था। इन राज्यों में राजनीतिक एकता का अभाव था। डॉ. ईश्वरीप्रसाद के शब्दों में "भारत 16वीं शताब्दी के आरम्भ में ऐसे राज्यों का एक समूह था, जो किसी भी ऐसे आक्रमणकारी का सरलता से शिकार हो सकता था, जो उसे जीतने की शक्ति और इच्छा रखता हो।"

बाबर के आक्रमण के समय में विद्यमान प्रमुख राज्यों का वर्णन निम्नवत् है :

(1) दिल्ली- बाबर के भारतीय अभियान के समय दिल्ली में लोदी वंश का शासन था जिसका तत्कालीन सम्राट इब्राहिम लोदी था। इब्राहिम लोदी, सिकन्दर लोदी का पुत्र था। सिकन्दर लोदी की मृत्यु के उपरान्त वह 21 नवम्बर, 1517 ई. को दिल्ली का शासक बना था। उसकी अमीरों के प्रति नीति अति निरंकुश थी। अमीरों के प्रति अति कठोर नीति ने अमीरों को उसके विरुद्ध विद्रोह करने के लिए प्रेरित एवं विवश किया। अतः अनेक सूबेदारों ने अपनी-अपनी स्वतन्त्र सत्ता की घोषणा कर दी थी।

(2) मेवाड़ बाबर के आक्रमण के समय उत्तर भारत का दूसरा महत्वपूर्ण राज्य मेवाड़ था। बाबर के आक्रमण के समय मेवाड़ पर राणा संग्राम सिंह(राणा सांगा) का शासन था। उसने अपनी विजयों से मेवाड़ को एक शक्तिशाली राज्य बना दिया था। राणा संग्राम (राणासांगा) की महत्वाकांक्षा राजपूत शक्ति का आगरा और दिल्ली में भी विस्तार करना था।

(3) पंजाब-पंजाब दिल्ली सल्तनत का ही अंग था तथा वहां का सूबेदार दौलत खां था। इब्राहिम की निरंकुश नीतियों, उसकी अयोग्यता व दौलत खां की महत्वाकांक्षा के कारण इब्राहिम व दौलत खां के परस्पर सम्बन्ध कटु हो गए। इब्राहिम लोदी के विरुद्ध उसने बाबर से भी सहायता लेने का प्रयत्न किया तथा स्वयं को स्वतन्त्र घोषित कर दिया।

(4) बंगाल- बंगाल में हुसैनी-वंश का राज्य था। बाबर ने यहां के शासक नसरत शाह की योग्यता को स्वीकार करते हुए उससे सन्धि कर ली थी।

(5) बिहार- बिहार वस्तुतः दिल्ली सल्तनत का ही अंग था, किन्तु वहां भी इब्राहिम के शासन काल में विद्रोह की अग्नि प्रज्वलित हो रही थी।

(6) जौनपुर जौनपुर भी दिल्ली सल्तनत का अंग था, किन्तु वहां भी नासिर खां के नेतृत्व में दिल्ली के सुल्तान के विरुद्ध संघर्ष चल रहा था।

(7) मालवा- 1526 ई. में मालवा का शासक महमूद द्वितीय था, जो एक अयोग्य शासक था। महमूद इस समय आन्तरिक संघर्ष में उलझा था। आन्तरिक संघर्ष के कारण मालवा की शक्ति को काफी क्षीण हो गयी थी।

(8) खानदेश- खानदेश ताप्ती नदी की घाटी में बसा छोटा-सा राज्य था। 1520 ई. में आदिल खां की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र महमूद प्रथम राजगद्दी पर बैठा, जो बाबर का समकालीन था।

(9) गुजरात-इस वंश के प्रमुख शासक मुजफ्फरशाह ने न केवल राजपूतों पर विजय प्राप्त करने का प्रयास किया वरन् दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खां को शरण देकर इब्राहिम से टक्कर लेने का साहस किया। मुजफ्फरशाह II बाबर का समकालीन था।

(10) सिन्ध -1516 ई. में सिन्ध पर कन्धार के शाह बेग अरगो ने अधिकार कर लिया। कुछ समय पश्चात् उसके पुत्र हुसैन ने मुल्तान पर भी अधिकार कर लिया। बाबर के आक्रमण के समय सिन्ध अरबों के ही प्रभाव में था।

(11) कश्मीर-1399 ई. हिन्दू राजा रामचन्द्र के मन्त्री शाह-मिर्जा ने उसकी हत्या करके कश्मीर में मुस्लिम शासन की स्थापना की। 1420 ई. में कश्मीर का शासक जैनुल आबदीन बना जो अत्यन्त योग्य शासक था। इसी कारण उसे कश्मीर का अकबर भी कहा जाता है। उसकी मृत्यु के पश्चात् कश्मीर में अराजकता व्याप्त हो गई।

(12) बहमनी राज्य- बाबर के आक्रमण के समय तक बहमनी राज्य पांच राज्यों-**बरार, बीदर, अहमदनगर, गोलकुण्डा व बीजापुर** में विभक्त हो गया, जिनमें पारस्परिक द्वेष था।
बाबर के भारतीय अभियान के समय उपर्युक्त सभी मुसलमान शासकों वाले राज्यों के अतिरिक्त कुछ ऐसे राज्य भी थे जहां हिन्दुओं का शासन था। बाबरकालीन प्रमुख हिन्दू राज्य निम्नवत् थे :

(13) उड़ीसा उड़ीसा राज्य यद्यपि अत्यन्त शक्तिशाली था, किन्तु भारतीय राजनीति में उसकी भूमिका उतनी प्रमुख नहीं थी। इसका कारण उड़ीसा का दिल्ली से बहुत दूर होना था।
(14) विजयनगर साम्राज्य-बाबर के अभियान के समय विजयनगर साम्राज्य का शासक कृष्णदेवराय था जो अत्यन्त योग्य एवं पराक्रमी था। उसने विजयनगर राज्य की सीमाओं को पश्चिम और पूरब में समुद्र तक तथा दक्षिण में कन्याकुमारी तक विस्तृत कर दिया था। उसके शासन-काल में विजयनगर शक्ति और समृद्धि के शिखर पर था। पुर्तगाल यात्री पेइज तथा ईरानी राजदूत अब्दुर्रज्जाक ने विजयनगर राज्य के वैभव तथा राज्य की शक्ति का विवरण दिया है।

उपर्युक्त चर्चा से स्पष्ट है कि बाबर के आक्रमण के समय भारत में राजनीतिक एकता का अभाव था तथा सम्पूर्ण भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था। भारत की सामाजिक व आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी, जिससे जनता कष्टमय जीवन व्यतीत कर रही थी।

बाबर

भारत में मुगल सत्ता का संस्थापक बाबर ही था। बाबर का वास्तविक नाम जहीरुद्दीन मुहम्मद था। बाबर का जन्म 14 फरवरी, 1483 ई. में था। बाबर के पिता का नाम उमर शेख मिर्जा तथा माता का नाम कुतलुग निगार खानम था। उमर शेख तैमूर का वंशज था तथा फरगना के एक छोटे-से राज्य का स्वामी था।

प्रारम्भिक कठिनाइयां-

12 वर्ष की अल्पायु में फरगना के सिंहासन पर बैठने के पश्चात् बाबर को अपार कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उसके पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर बाबर के चाचा अहमद मिर्जा (समरकन्द का शासक) व दूसरी ओर से मामा महमूद खां ने फरगना पर अधिकार करने का प्रयास किया। बाबर अपनी जनता की दृढ़ता व स्वामिभक्ति के कारण फरगना की रक्षा करने में सफल रहा।

(1) समरकन्द पर आक्रमण समरकन्द एक प्रमुख नगर था, जिसका शासक बाबर का चाचा अहमद मिर्जा था। बाबर इस नगर पर अधिकार करना चाहता था। 1494 ई. में समरकन्द के शासक अहमद मिर्जा की मृत्यु हो चुकी थी। बाबर ने जुलाई, 1496 ई. में समरकन्द पर आक्रमण किया, किन्तु इस अभियान में उसे सफलता न मिली। तत्पश्चात् 1497 ई. में बाबर ने पुनः समरकन्द पर आक्रमण किया व विजय प्राप्त की हालांकि वह समरकन्द पर कुल 100 दिन ही शासन कर पाया। 1501 ई. में बाबर ने पुनः समरकन्द पर अधिकार कर लिया, किन्तु समरकन्द पर उसका आधिपत्य अधिक समय तक कायम न रह सका। 1511 ई. में उसने समरकन्द पर अधिकार कर लिया, परन्तु कुछ समय पश्चात् समरकन्द बाबर के हाथ से पुनः निकल गया।

(2) फरगना पर विजय अन्ततः 1498 ई. में बाबर ने फरगना पर पुनः अधिकार कर लिया। 1500 ई. में फरगना पुनः हाथ से निकल गया।

(3) काबुल पर अधिकार-1504 ई. में बाबर ने काबुल पर आक्रमण करके अधिकार कर लिया।

बाबर के भारतीय अभियान के कारण

बाबर अत्यन्त महत्वाकांक्षी व्यक्ति था। समरकन्द में असफल हो जाने के पश्चात् उसका ध्यान भारत की ओर केन्द्रित हुआ व विशाल साम्राज्य स्थापित करने की अपनी महत्वाकांक्षा को पूर्ण करने के लिए उसे भारत उचित लगा। बाबर तैमूर का वंशज था, अतः वह स्वयं को पंजाब का अधिकारी समझता था क्योंकि जब तैमूर ने भारत पर आक्रमण किया था तब उसने पंजाब पर विजय प्राप्त की थी।

भारत आर्थिक रूप से एक सम्पन्न देश था। अतः भारतीय धन-सम्पदा ने भी बाबर को भारतीय अभियान के लिए प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त भारत की तत्कालीन राजनीतिक स्थिति भी मजबूत नहीं थी। सम्पूर्ण भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था जिनमें अत्यधिक पारस्परिक द्वेष था। अतः भारत पर आक्रमण हेतु बाबर के लिए कोई विशेष परेशानियां दृष्टिगत नहीं हो रही थीं। ऐसा माना जाता है कि बाबर का यह कार्य उस समय और सरल हो गया जब पारस्परिक द्वेष के कारण

अफगान अमीरों तथा इब्राहिम लोदी के चाचा आलमखां ने उसे भारत पर आक्रमण करने के लिए आमन्त्रित किया। इस प्रकार बाबर को दोहरा लाभ हुआ। जहां एक ओर इस तथ्य की पुष्टि हो गयी कि भारतीयों में पारस्परिक फूट है वहीं उसे सहायता करने वाले व्यक्ति भी मिल गए।

बाबर का भारतीय अभियान

बाबर ने भारत पर आक्रमण करने से पहले पर्याप्त तैयारियां कीं। उसने समरकन्द के उगबेकों से तुलुगमा पद्धति, मंगोलों से व्यूह रचना व ईरानियों से बारूद का प्रयोग व सजातीय तुर्कों से अश्व सेना का संचालन सीखा। इस प्रकार उसने अपनी सेना को संगठित एवं युद्ध-कला को उन्नत कर लिया था। तत्पश्चात् उसने भारत का पहला अभियान किया।

प्रथम आक्रमण (1519 ई.)- बाबर ने भारत पर पहला आक्रमण 1519 ई. में किया। 7 जनवरी, 1519 ई. को बाबर ने बाजौर पर अधिकार कर लिया तत्पश्चात् उसने झेलम के तट पर स्थित भीरा के निवासियों को आत्मसमर्पण करने के लिए विवश किया।

द्वितीय आक्रमण (1519 ई. सितम्बर)- हिन्दू बेग भीरा से भाग बाबर के पास काबुल पहुंचा। अतः बाबर ने पुनः भारत की ओर प्रस्थान किया, किन्तु पेशावर पहुंचने पर उसे सूचना मिली कि सुल्तान सैदखान बदख्शां की ओर बढ़ रहा है। इसलिए बदख्शां की रक्षा के लिए बाबर को काबुल लौटना पड़ा।

तृतीय आक्रमण (1520 ई.) - बाबर ने तृतीय भारतीय अभियान 1520 ई. में किया। अफगानों को रौंदता हुआ वह स्यालकोट जा पहुंचा। स्यालकोट के निवासियों ने आत्मसमर्पण कर दिया। तत्पश्चात् बाबर सैयदपुर पहुंचा, जहां के निवासियों ने उसके विरुद्ध के संघर्ष किया, किन्तु अन्ततः बाबर को सफलता मिली।

चतुर्थ आक्रमण (1524 ई.)- बाबर ने भारत में चौथा अभियान 1524. ई. में किया। बाबर ने भारत की ओर आते हुए लाहौर व दीपालपुर पर अधिकार कर लिया। बाबर ने इन दोनों क्षेत्रों का सूबेदार उसके पुत्र दिलावर खां को बना दिया।

पांचवां आक्रमण (1525 ई.)- बाबर ने भारत पर पांचवीं बार आक्रमण नवम्बर 1525 ई. में किया। बाबर को अनेक अफगान अमीरों ने, जो सुल्तान इब्राहिम से असन्तुष्ट थे, अपनी-अपनी शुभकामनाएं भेजीं, जिनसे प्रोत्साहित होकर बाबर दिल्ली पर आंक्रमण करने के लिए प्रयत्नशील हो गया।

पानीपत का युद्ध (1526 ई.)

अपने प्रारम्भिक अभियानों के द्वारा पंजाब पर अधिकार करने के पश्चात् बाबर दिल्ली पर अधिकार करना चाहता था, जहां उस समय लोदी वंशज इब्राहिम शासन करता था। इब्राहिम एक विशाल सेना का स्वामी था, जबकि बाबर के अधीन मात्र 12 हजार सैनिक थे, किन्तु अनेक भारतीय सरदारों द्वारा बाबर के प्रति सहानुभूति रखने के कारण वह दिल्ली पर आक्रमण करने का साहस कर सका। बाबर के साथ उसका पुत्र हुमायूं भी था। बाबर ने सरहिन्द व अम्बाला होते हुए दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। जब इस बात की सूचना इब्राहिम को मिली तो उसने भी एक शक्तिशाली सेना के साथ बाबर का सामना करने के लिए दिल्ली से कूच किया। दोनों सेनाएं पानीपत के मैदान में आमने-सामने खड़ी हो गईं।

अन्ततः 19 अप्रैल, 1526 ई. को बाबर ने रात में लोदी-सेना पर आक्रमण किया, किन्तु यह आक्रमण विफल हुआ। तत्पश्चात् 21 अप्रैल को निर्णायक युद्ध हुआ। इब्राहिम लोदी इस युद्ध में मारा गया। इब्राहिम को पानीपत के युद्ध में परास्त करने के पश्चात् बाबर ने हुमायूं व ख्वाजा को आगरा पर अधिकार करने भेजा। एक अन्य दल को उसने दिल्ली पर अधिकार करने के लिए भेजा। इस प्रकार दिल्ली व आगरा पर उसका अधिकार हो गया तथा 26 अप्रैल, 1526 ई. को दिल्ली में उसके नाम का खुतबा पढ़ा गया। इस प्रकार भारत में मुगल शासन की स्थापना हुई।

पानीपत के युद्ध के परिणाम:

1526 ई. में हुआ पानीपत का युद्ध भारतीय इतिहास में एक नवीन युग का आविर्भाव हुआ। इस प्रकार सल्तनत युग समाप्त हुआ व मुगल युग की स्थापना हुई। पानीपत के युद्ध के निम्नलिखित प्रमुख परिणाम हुए:

(1) लोदी वंश का पतन-पानीपत के युद्ध में इब्राहिम की मृत्यु के साथ ही लोदी वंशीय शासन का पतन हो गया। इस युद्ध की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए डॉ. ईश्वरीप्रसाद ने लिखा है, "पानीपत के युद्ध से ही दिल्ली साम्राज्य बाबर के हाथ में आ गया। लोदी-वंश के पतन के साथ ही दिल्ली सल्तनत का भी पतन हो गया।

(2) मुगल शासन की स्थापना- पानीपत के युद्ध से दिल्ली का साम्राज्य बाबर के हाथों में आ गया। इस प्रकार 1526 ई. में बाबर ने मुगल शासन की स्थापना भारत में की।

(3) राजपूतों के लिए नयी चुनौती- स्पष्ट हो गया कि अब राजपूतों को बाबर का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि बाबर अत्यधिक महत्वाकांक्षी शासक था।

इब्राहिम लोदी की पराजय व बाबर की विजय के कारण

पानीपत के युद्ध में बाबर की विजय व इब्राहिम की पराजय के अनेक कारण थे जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित थे :

पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर की सफलता के कारण

1. बाबर का व्यक्तित्व
2. बाबर के योग्य सेनापति
3. मुगल सेना का रण कौशल
4. बारूद का प्रयोग
5. बाबर का कुशल सैन्य संचालन व्यूह-रचना
6. अनेक अफगानों का बाबर के साथ होना
7. अफगानों का नैतिक पतन।

(1) बाबर का व्यक्तित्व- बाबर अत्यन्त महत्वाकांक्षी व्यक्ति था जिसमें आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा हुआ था। बाबर बचपन से युद्धों में रत रहा था, अतः उसे युद्धों व युद्ध संचालन का अनुभव था। इसके विपरीत, इब्राहिम लोदी को विशेष अनुभव न था। अतः शक्तिशाली होते हुए भी वह सरलतापूर्वक परास्त हो गया।

(2) बाबर के योग्य सेनापति बाबर स्वयं तो अत्यन्त योग्य सेनापति था ही, उसके अन्य सेनापति भी योग्य थे। बाबर द्वारा तुलुगमा पद्धति का प्रयोग किए जाने पर लोदी की सेना पराजित हो गई।

(3) मुगल सेना का रण कौशल-मुगल सैनिक जानते थे कि भारत एक धनाढ्य देश है, इसके जीतने पर उन्हें अपार धन-सम्पत्ति मिलने की सम्भावना थी। अतः धन-सम्पत्ति का लालच उनके उत्साह में और अधिक वृद्धि करता था। इसके विपरीत, इब्राहिम लोदी के सैनिक न तो मुगल सैनिकों के समान योग्य व अनुभवी थे और व्यक्तिहित न होने के कारण उनमें उत्साह की भी कमी थी।

(4) बारूद का प्रयोग बाबर के पास तोपें होने के कारण भी इस युद्ध में बाबर की विजय आसान हो गई थी।

(5) बाबर का कुशल सैन्य-संचालन व व्यूह रचना- बाबरसैन्य-संचालन व व्यूह-रचना करने में दक्ष था। बाबर की सेना संख्याबल में कम थी, किन्तु अत्यन्त गतिशील थी। वह तीव्रता से आक्रमण भी कर सकती थी साथ ही विपरीत परिस्थितियों में भाग भी सकती. थी। इब्राहिम की सेना में न तो तीव्र गति थी और न ही आक्रमण करने की क्षमता। इब्राहिम ने हाथी सेना को सबसे आगे रखा, जो तोपों के दागे जाने पर पलट कर भागने लगे तथा अपनी ही सेना को रौंदते हुए चले गए।

(6) अनेक अफगानों का बाबर के साथ होना- इब्राहिम लोदी ने शासक बनने के पश्चात् अनुशासन बनाए रखने के उद्देश्य से कठोर नीति का पालन किया था, जिससे अनेक सरदार उससे नाराज हो गए थे व उसके विरुद्ध षड्यन्त्र कर रहे थे। इन्होंने इन्ब्राहिम पर आक्रमण करने के लिए बाबर के प्रति सहानुभूति प्रकट की थी। इस प्रकार बाबर को इनका समर्थन प्राप्त होने से उसको नैतिक बल तो मिला और वो भारत पर आक्रमण करने के लिए भी प्रोत्साहित हुआ।

(7) अफगानों का नैतिक पतन प्रारम्भ में अफगान नैतिक मूल्यों में अत्यन्त विश्वास रखने वाले, परिश्रमी व देश के प्रति प्रेम रखने वाले थे, किन्तु धीरे-धीरे वे आराम, मनोरंजन व विलासिता में लिप्त रहने लगे। परिणामस्वरूप उनका नैतिक पतन होना प्रारम्भ हो गया। इस नैतिक पतन ने भी इब्राहिम लोदी की पराजय में प्रमुख योगदान दिया।

उपर्युक्त समस्त कारणों के परिणामस्वरूप पानीपत के युद्ध में बाबर की विजय व इब्राहिम की पराजय हुई।

पानीपत के युद्ध के पश्चात् बाबर की समस्याएं

पानीपत के युद्ध में बाबर ने इब्राहिम लोदी को परास्त किया तथा दिल्ली व आगरा पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् भी बाबर के सामने अनेक कठिनाइयाँ आयीं, जिनमें से प्रमुख निम्नवत् थीं:

(1) बाबर द्वारा दिल्ली पर अधिकार किए जाने के कारण नागरिक नगर छोड़कर भाग रहे थे। बाबर ने लोगों को यह आश्वासन दिया कि जो लोग उसकी अधीनता स्वीकार कर लेंगे, उन्हें किसी प्रकार से प्रताड़ित नहीं किया जाएगा।
(2) अनेक अफगान सरदारों ने इस बीच स्वतन्त्र सत्ता स्थापित कर ली थी। बाबर ने घोषणा की कि जो अफगान सरदार उसका आधिपत्य स्वीकार कर लेंगे, उन्हें बड़ी-बड़ी जागीरें दी जाएंगी। इस प्रकार अनेक अफगानों ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली तथा कुछ को उसने शक्ति के द्वारा अपना आधिपत्य स्वीकार करने के लिए विवश किया।
(3) बाबर के सैनिक काफी समय से काबुल से बाहर थे, अतः अब वे काबुल लौटने के लिए प्रयत्नशील थे। बाबर ने उन्हें भारत में रुकने के लिए तैयार कर लिया।
(4) बाबर के समक्ष सर्वप्रथम समस्या राजपूतों की थी। राजपूतों का नेता मेवाड़ का शासक राणा सांगा (राणा संग्राम सिंह) था। राणा सांगा अत्यन्त पराक्रमी था तथा दिल्ली पर अधिकार करना चाहता था। अतः राणा व बाबर में संघर्ष होना आवश्यक हो गया।

खानवा का युद्ध (16 मार्च, 1527 ई.)

भारत में शासन करने के लिए बाबर के लिए आवश्यक था कि वह राजपूतों की शक्ति का दमन करे। दूसरी ओर राजपूत शासक भी राणा सांगा के नेतृत्व में मुगलों को भारत से निष्कासित करने के लिए उद्यत थे। खानवा के इस युद्ध में राजपूतों की पराजय व बाबर की विजय हुई। खानवा के युद्ध के परिणाम पानीपत के युद्ध के परिणामों से कम प्रभावशाली नहीं रहे। इस युद्ध के अत्यन्त गम्भीर परिणाम हुए, क्योंकि उससे उत्तर भारत पर से राजपूतों का प्रभाव समाप्त हो गया व मुगलों का आधिपत्य स्थापित हुआ। इस युद्ध के पश्चात् मुगलों के भारत में पांव जम गए तथा बाबर की शक्ति का केन्द्र अब काबुल न होकर भारत होना निश्चित हो गया।

चन्देरी पर विजय (29 जनवरी, 1528 ई.)

चन्देरी का शासक उस समय मेदिनीराय था। मेदिनीराय ने बाबर के विरुद्ध युद्ध में राणा सांगा की ओर से भाग लिया था। अतः मेदिनीराय को परास्त करना बाबर के लिए आवश्यक था। इसके अतिरिक्त यदि चन्देरी पर उसका अधिकार हो जाता तो वह गंगा-यमुना के दोआब तथा राजपूताना पर निगाह रख सकता था।

उपर्युक्त कारणों से प्रेरित होकर बाबर ने पहले तो अप्रैल, 1527 ई. में अलवर पर अधिकार किया तत्पश्चात् जनवरी 1528 ई. में चन्देरी पर आक्रमण किया। राजपूतों ने बाबर का अत्यन्त वीरतापूर्वक सामना किया, किन्तु अन्ततः उनकी पराजय हो गयी व 29 जनवरी, 1528 ई. को बाबर का चन्देरी पर अधिकार हो गया। बाबर ने चन्देरी में अहमदशाह को शासक नियुक्त किया।

घाघरा का युद्ध (6 मई, 1529 ई):

इब्राहिम लोदी का भाई महमूद लोदी अफगानों को संगठित कर विहार में बाबर के विरुद्ध युद्ध की तैयारी कर रहा था। अतः उसका दमन करने के लिए बाबर 2 फरवरी, 1528 ई. को बिहार की ओर रवाना हुआ। गाजीपुर पहुंचने पर कुछ अफगान सरदार बाबर से जा मिले। अफगान नेताओं को बंगाल के शासक नसरतशाह का समर्थन प्राप्त था। अतः बाबर ने नसरतशाह को चेतावनी दी, किन्तु नसरतशाह ने उसका कोई उत्तर नहीं दिया। अतः बाबर ने 6 मई, 1529 ई. को घाघरा नदी के किनारे अफगानों का सामना किया। घमासान युद्ध के पश्चात् अफगान परास्त हो गए तथा नसरतशाह से उसकी सन्धि हो गयी जिसमें नसरतशाह ने बाबर के शत्रुओं को शरण न देना स्वीकार किया। इस युद्ध के पश्चात् अफगानों का साहस कुछ समय के लिए पस्त हो गया। बाबर के जीवन का भी यह अन्तिम युद्ध था। इस युद्ध के पश्चात् बाबर का साम्राज्य सिन्धु से बिहार व हिमालय से चन्देरी तक विस्तृत था। इस प्रकार बाबर भारत के विशाल एवं प्रमुख भू-भाग का स्वामी बन गया।

26 दिसम्बर, 1530 ई. को बाबर की मृत्यु हो गयी तथा उसकी इच्छा के अनुसार उसे काबुल में दफना दिया गया।

हुमायूं (1530-1556 ई.)

बाबर की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बाबर दिल्ली की गद्दी पर बैठा। नासिरुद्दीन हुमायूं (हुमायूं शब्द का अर्थ 'भाग्यशाली' होता है) का जन्म 6 मार्च, 1508 ई. को काबुल में हुआ था। हुमायूं को 30 दिसम्बर, 1530 ई. को बाबर के उत्तराधिकारी के रूप में राजगद्दी पर बैठाया गया। हुमायूं को राजगद्दी पर बैठने के पश्चात् अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा, जिनमें से प्रमुख निम्नवत् हैं :

हुमायूं की प्रारम्भिक कठिनाइयां

(1) विशाल साम्राज्य बाबर ने हुमायूं के लिए उत्तराधिकार में एक विशाल साम्राज्य छोड़ा था जिसमें विशाल भारतीय भू-भागों के अतिरिक्त मध्य एशिया के भी बलख, बदख्शां व कुन्दुज के प्रान्त सम्मिलित थे।

(2) सक्षम प्रशासनिक व्यवस्था का अभाव- बाबर ने यद्यपि एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी, किन्तु उसने अपने साम्राज्य में सक्षम प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना नहीं की थी। इस प्रकार हुमायूं को असंगठित राज्य उत्तराधिकार में मिला।

(3) साम्राज्य का विभाजन हुमायूं ने बाबर की इच्छानुसार साम्राज्य को अपने भाइयों में विभाजित कर दिया था। कालान्तर में साम्राज्य का विभाजन उसके लिए परेशानी का कारण बना।

हुमायूं की प्रारम्भिक कठिनाइयां

1. विशाल साम्राज्य
2. सक्षम प्रशासनिक व्यवस्था का अभाव
3. साम्राज्य का विभाजन
4. दोषपूर्ण सैन्य संगठन
5. रिक्त राजकोष
6. बाबर के सम्बन्धियों के षड्यन्त्र
7. राजपूत समस्या
8. अफगान समस्या

(4) दोषपूर्ण सैन्य-संगठन मुगल सेना का संगठन दोषपूर्ण था। मुगल सेना मुगल, तुर्क, पारसी, उजबेग, अफगान व भारतीयों का सम्मिश्रण थी। जब तक बाबर राजगद्दी पर बैठा रहा अपनी योग्यता के कारण वह सेना को अनुशासित व संगठित रखे रहा, किन्तु हुमायूं के शासक बनते ही स्थिति में परिवर्तन होने लगा।

(5) रिक्त राजकोष- बाबर की अपव्ययी नीति के कारण राजकोष खाली हो गया था। हुमायूं ने भी शासक बनने से पश्चात् आर्थिक स्थिति को सुधारने का प्रयत्न नहीं किया व धन का अपव्यय किया, अतः साम्राज्य आर्थिक दृष्टिकोण से कमजोर हो गया।

(6) बाबर के सम्बन्धियों के षड्यन्त्र हुमायूं को अपने सम्बन्धियों के कारण भी अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा। बाबर की मृत्यु के पश्चात् हुमायूं के सिंहासन पर अधिकार करने के लिए वे प्रयत्नशील थे, जिसका समुचित प्रबन्ध करना उसके लिए आवश्यक था।

(7) राजपूत समस्या- बाबर ने खानवा के युद्ध में राणा सांगा को परास्त करके राजपूतों की शक्ति को क्षीण कर दिया था, किन्तु अब राजपूत राणा सांगा के पुत्र रत्नसिंह के नेतृत्व में मुगलों को भारत से निष्कासित करने का प्रयत्न करने लगे थे।

(8) अफगान समस्या- राजपूतों के साथ-साथ अफगान सरदार भी पुनः अपना राज्य प्राप्त करने की चेष्टा कर रहे थे। बिहार में शेरखां स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने का स्वप्न देख रहा था। इब्राहिम लोदी का चाचा आलमखां भी गुजरात के शासक की सहायता लेकर दिल्ली पर अधिकार करना चाहता था।

इस प्रकार हुमायूं के राजगद्दी पर बैठते समय उपर्युक्त सभी समस्याएं उसके समक्ष थीं। इन परिस्थितियों में एक योग्य व्यक्ति की आवश्यकता थी, किन्तु हुमायूं उतना योग्य न था, अतः उसे अपार संकटों का सामना करना पड़ा।

हुमायूं के अभियान

हुमायूं द्वारा किए गए प्रारम्भिक अभियान निम्नवत् थे :

(1) कालिंजर पर आक्रमण
(2) महमूद लोदी से संघर्ष
(3) कामरान का विद्रोह
(4) चुनार का घेरा
(5) मिर्जाओं का विद्रोह
(6) गुजरात के शासक से संघर्ष
(7) शेरखां से संघर्ष
(8) चौसा का युद्ध
(9) बिलग्राम अथवा कन्नौज का युद्ध।

(1) कालिंजर पर आक्रमण कालिंजर का राजा रुद्र प्रताप कालपी पर अधिकार करने का प्रयत्न कर रहा था। कालपी का किला अत्यधिक सामरिक महत्व का था, अतः हुमायूं ने कालिंजर के किले को घेर लिया। यह घेरा एक माह तक पड़ा रहा, अन्ततः उसे कालिंजर के शासक के साथ समझौता करना पड़ा।

(2) महमूद लोदी से संघर्ष हुमायूं व महमूद लोदी का सामना अगस्त 1532 ई. में दोहरिया नामक स्थान पर हुआ, जिसमें हुमायूं को विजय प्राप्त हुई। महमूद लोदी की सेना पराजित होकर बिहार की ओर भाग खड़ी हुई, किन्तु हुमायूं भागती हुई अफगान सेना का पीछा न कर सका, क्योंकि उसी समय उसे उसके भाई कामरान के विद्रोह का समाचार मिला।

(3) कामरान का विद्रोह हुमायूं के भाई कामरान ने हुमायूं को युद्धों में व्यस्त देखकर मुल्तान एवं लाहौर पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् उसने हुमायूं से निवेदन किया कि वह पंजाब व मुल्तान के प्रदेश उसे दे दे। हुमायूं ने उसकी मांग को स्वीकार कर लिया।

(4) चुनार का घेरा (1532 ई.)- कामरान की समस्या सुलझाने के पश्चात् हुमायूं ने पुनः अफगान समस्या की ओर ध्यान दिया तथा चुनार के किले को घेर लिया। यह घेरा चार माह (सितम्बर से दिसम्बर 1532 ई.) तक रहा। चार माह के घेरे के पश्चात् शेरखां ने सन्धि कर ली व हुमायूं की अधीनता स्वीकार कर ली।

(5) मिर्जाओं का विद्रोह- 1534 ई. में मुहम्मद जमान मिर्जा व सुल्तान मिर्जा ने विद्रोह कर दिया। हुमायूं ने दोनों को परास्त कर बन्दी बना लिया, किन्तु मुहम्मद जमान मिर्जा भाग निकला व उसने गुजरात के शासक बहादुरशाह के यहां शरण ले ली।

(6) गुजरात के शासक से संघर्ष -गुजरात व मालवा का शासक बहादुरशाह था जो अत्यन्त शक्तिशाली था। उसने अपने दरबार में इब्राहिम लोदी के चाचा आलमखां व मुहम्मद जमान मिर्जा को शरण दे रखी थी। हुमायूं ने बहादुरशाह से जमान मिर्जा उसे सौंप देने के लिए कहा जिसे बहादुरशाह ने ठुकरा दिया। अतः हुमायूं ने सेना के साथ प्रस्थान किया व उज्जैन पहुंच गया। उस समय बहादुरशाह ने चित्तौड़ को घेर रखा था। चित्तौड़ की रानी कर्णवती ने राखी भेजकर हुमायूं से सहायता मांगी। हुमायूं ने राखी को स्वीकार किया तथा आगे बढ़ते हुए सारंगपुर तक पहुंच गया। इसी समय बहादुरशाह ने हुमायूं को सूचित किया कि वह काफिरों की सहायता न करे। हुमायूं बहादुरशाह की बातों में आ गया व उसने राजपूतों की सहायता नहीं की। यह हुमायूं की भारी भूल थी। यदि इस समय हुमायूं राजपूतों की सहायता करता तो उसे दोहरा फायदा होता। एक तो बहादुरशाह को परास्त करने में उसे राजपूतों की सहायता मिल जाती दूसरी ओर राजपूतों पर भी उसका प्रभुत्व जम जाता; अन्त में गुजरात पर बहादुरशाह का प्रभुत्व हो गया।

(7) शेरखां से संघर्ष जिस समय हुमायूं गुजरात के बहादुरशाह से संघर्ष में व्यस्त था, उस समय शेरखां ने बंगाल के शासक शाह महमूद को परास्त (1536 ई.) कर सम्पूर्ण बिहार व बंगाल पर अधिकार कर लिया। जब हुमायूं को शेरखां के इस कार्य के विषय में पता चला तो 27 जुलाई, 1537 ई. को वह हिन्दाल के साथ शेरखां पर आक्रमण करने के लिए चला। जून 1538 ई. में हुमायूं ने चुनार पर अधिकार कर लिया।

(8) चौसा का युद्ध (27 जून, 1539 ई.) जिस समय हुमायूं गौड़ में आराम कर रहा था उसके भाई हिन्दाल ने विद्रोह कर दिया। अतः हुमायूं को वापस लौटना पड़ा, किन्तु रास्ते में मार्ग को शेरखां ने अवरुद्ध कर रखा था। 27 जून, 1539 ई. को प्रातः ही शेरखां ने हुमायूं पर आक्रमण कर दिया। वर्षा होने से कीचड़ होने पर हुमायूं की सेना में भगदड़ मच गयी व हुमायूं को युद्ध छोड़कर भागना पड़ा। भागते समय निजाम नामक भिश्ती ने हुमायूं को गंगा नदी पार कराके उसकी जान बचायी।

(9) बिलग्राम अथवा कन्नौज का युद्ध (17 मई, 1540 ई.)- चौसा के युद्ध में पराजित होने के पश्चात् हुमायूं भागकर आगरा आया व किसी प्रकार सेना एकत्र की। शेरशाह हुमायूं का पीछा करता हुआ

फरवरी 1540 ई. में कन्नौज तक आ गया। दोनों सेनाएं एक माह तक आमने-सामने पड़ी रहीं। अन्ततः 17 मई, 1540 ई. को शेरशाह ने मुगलों पर आक्रमण किया। वर्षा के कारण मुगलों की तोपें बेकार हो गयीं और मुगल सेना भाग खड़ी हुई। हुमायूं भी किसी प्रकार भागने में सफल हो गया।

कन्नौज के युद्ध में परास्त होने के पश्चात् हुमायूं को 1540 ई. से 1555 ई. तक निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा। इसी बीच शेरखां ने सम्पूर्ण पंजाब पर अधिकार कर लिया। उल्लेखनीय है कि हुमायूं के भाइयों ने इस संकट के समय उसका साथ नहीं दिया।

हुमायूं की असफलता के कारण

हुमायूं की असफलताओं के लिए अनेक कारण उत्तरदायी थे जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नवत् थे:

(1) साम्राज्य का बंटवारा
(2) जनता का सहयोग प्राप्त न करना
(3) शेरशाह की शक्ति की उपेक्षा
(4) शेरशाह की योग्यता
(5) अक्षम गुप्तचर-व्यवस्था
(6) बहादुरशाह के प्रति नीति
(7) समय का दुरुपयोग एवं आमोद-प्रमोद में व्यस्त
(8) हुमायूं का दुर्भाग्य
(9) अफगानों का तोपखाना
(10) अपव्ययता
(11) हुमायूं की दुर्बलता

(1) साम्राज्य का बंटवारा हुमायूं ने बाबर की इच्छा को मानते हुए सम्पूर्ण साम्राज्य को चारों भाइयों में विभक्त कर दिया। उस समय आवश्यकता सम्पूर्ण साम्राज्य को एक सूत्र में पिरोने की थी, न कि उसके विभाजन की। इससे साम्राज्य की शक्ति पर आघात हुआ।

(2) जनता का सहयोग प्राप्त न करना हुमायूं ने भारतीय जनता व स्थानीय शासकों का सहयोग प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया।

(3) शेरशाह की शक्ति की उपेक्षा हुमायूं ने शेरशाह की निरन्तर बढ़ती हुई शक्ति की उपेक्षा की। यह निःसन्देह हुमायूं की एक राजनीतिक भूल थी।

(4) शेरशाह की योग्यता-शेरशाह एक अत्यन्त योग्य व्यक्ति था। शेरशाह ने हुमायूं को परास्त करने के लिए कूटनीति का भी सहारा लिया। अतः हुमायूं के लिए उसका सामना करना असम्भव हो गया।

(5) अक्षम गुप्तचर-व्यवस्था हुमायूं की गुप्तचर- व्यवस्था भी अक्षम थी। इस तथ्य का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि शेरशाह व बहादुरशाह के मध्य हुए गठबन्धन के विषय में हुमायूं को पता ही न चला।

(6) बहादुरशाह के प्रति नीति-हुमायूं जिस समय बहादुरशाह पर आक्रमण करने के लिए उज्जैन पहुंचा

था, उस समय बहादुरशाह ने चित्तौड़ को घेर रखा था। हुमायूं को राजपूतों के सहयोग से बहादुरशाह को पराजित करना चाहिए था, किन्तु हुमायूं ने ऐसा नहीं किया। हुमायूं की यह भयंकर राजनीतिक भूल थी।

(7) समय का दुरुपयोग एवं आमोद-प्रमोद में व्यस्त हुमायूं की असफलता का एक प्रमुख कारण उसके द्वारा समय का सदुपयोग न करना था। जिस समय उसे तीव्र गति से आगे बढ़कर विजय प्राप्त करनी चाहिए थी, उस समय वह विलासिता में व्यस्त हो जाता था तथा शत्रु पक्ष को सैनिक तैयारी पूरी कर लेने का समय दे देता था। एलफिन्स्टन ने ठीक ही लिखा है, "युद्ध जीतने तथा शहर पर आक्रमण करने के बाद वह चुपचाप बैठकर विजित कोष के धन को खर्च करने में लग जाता था।"

(8) हुमायूं का दुर्भाग्य' हुमायूं' का अर्थ यद्यपि भाग्यवान होता है, किन्तु हुमायूं अत्यन्त भाग्यहीन था। यदि बंगाल का शासक महमूदशाह कुछ और समय तक शेरखां से अपने राज्य की रक्षा करने में सफल हो जाता तो हुमायूं की विजय निश्चित थी। इसी प्रकार चौसा व कन्नौज के युद्धों में भीषण वर्षा हो जाने के कारण हुमायूं को भारी मूल्य चुकाना पड़ा।

(9) अफगानों का तोपखाना- बाबर को भारत में विजय इसलिए प्राप्त हुई थी कि उसके तोपखाने का सामना अफगान न कर सके थे, किन्तु अब अफगानों ने भी उच्चकोटि के तोपखाने को प्राप्त कर लिया था।

(10) अपव्ययता- बाबर के द्वारा अपार धन-सम्पत्ति को खुले हाथों से सैनिक व सरदारों में बांटने व निरन्तर युद्धों में रत रहने के कारण राजकोष खाली होता गया। हुमायूं ने भी रिक्त राजकोष की ओर ध्यान न दिया व अपार धन खर्च किया। अतः राज्य की आर्थिक स्थिति और खराब हो गई।

(11) हुमायूं की दुर्बलता लेनपूल ने लिखा है, "हुमायूं का सबसे बड़ा दुश्मन वह स्वयं था।" इसमें कोई भी सन्देह नहीं है। हुमायूं ने कभी स्थिति के अनुकूल कार्य नहीं किया। इनके अतिरिक्त उसकी व्यक्तिगत दुर्बलताएं भी उसके पतन का कारण बनीं।

1555 ई. में पुनः राजगद्दी पर बैठने के पश्चात् हुमायूं के संकट के दिन समाप्त हो गए क्योंकि अब पहले के समान उसका कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं था। 24 जनवरी, 1556 ई. को सीढ़ी से गिरकर उसकी मृत्यु हो गयी।

महत्वपूर्ण तिथियां एवं घटनाएं

- 1483 ई. बाबर का जन्म।
- 1494 ई. बाबर फरगना का शासक बना।
- 1508 ई. हुमायूं का जन्म।
- 1526 ई. पानीपत का प्रथम युद्ध, मुगल-वंश की स्थापना।
- 1527 ई. खानवा का युद्ध।
- 1528 ई. चन्देरी का युद्ध।
- 1529 ई. घाघरा का युद्ध।
- 1530 ई. बाबर की मृत्यु ।
- 1530 ई.- हुमायूं शासक बना।
- 1539 ई. चौसा का युद्ध।
- 1540 ई. कन्नौज का युद्ध, हुमायूं का पलायन।
- 1555 ई. हुमायूं की वापसी।
- 1556 ई. हुमायूं की मृत्यु।

Lucknow IAS Academy

Lucknow IAS Academy

LiA

Join our telegram channel